J–201

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य (Assignment Work) सत्र – जनवरी–दिसंबर 2024

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – वेद निरूक्त एवं वैदिक साहित्य **प्रश्नपत्रः प्रथम**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

(Assignment—1)

खण्ड—अ

1. उषासूक्त में कौन&सा छन्द है ?
2. परिमृशत्ति का अर्थ क्या है ?
3. 'न निर्वद्धाः' का अर्थ लिखिए।
4. काल सूक्त के ऋषि का नाम लिखिए।
5. 'सम्भूति' का अर्थ लिखिए।
6. ईशावास्योपनिषद् किस शाखा से सम्बद्ध है ?
7. 'शतपथ ब्राह्मण' किस वेद का ग्रन्थ है ?
8. वेद का मुख किसे कहा गया है ?

खण्ड—ब

9. 'अग्निर्होता कवि क्रतुः' का भाव स्पष्ट कीजिए।

10. 'अश्वावतीगोमतीर्विश्वा' का अर्थ समझाइए।
11. 'स न इन्द्र शिवः' मन्त्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
12. ' मा गृधाः कस्यस्विद् धनम्' की व्याख्या कीजिए।
13. 'अग्ने नय सुपथा राये' को स्पष्ट कीजिए।
14. गोपथ ब्राह्मण का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

(Assignment—2)

खण्ड—स

15. इन्द्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
16. कालसूक्त निहित शिक्षा का प्रतिपादन कीजिए।
17. स्वेक्षण तथा परेक्षण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
18. सामवेद की विषयवस्तु की विवेचना कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

(Assignment—3)

खण्ड—द

19. विराटपुरुष की महत्ता का वर्णन कीजिए।
20. षड्भाव विकार का विस्तृत वर्णन कीजिए।
21. ईशावास्योपनिषद् के अनुसार आत्मा का वर्णन कीजिए।
22. वेदा①ों में ज्योतिष के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

(Assignment—4)

खण्ड—इ

23. ईशावास्योपनिषद् के दार्शनिक महत्व की समीक्षा कीजिए।
24. वेदा①ों का विवेचन करते हुए उनके महत्व पर प्रकाश डालिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 31 अगस्त 2024 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जनवरी–दिसंबर 2024 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जनवरी–दिसंबर 2024 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**

J-202

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य (Assignment Work) सत्र – जनवरी–दिसंबर 2024

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – पाली प्राकृत एवं भाषा विज्ञान **प्रश्नपत्रः द्वितीय**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

(Assignment—1)

खण्ड—अ

निम्नलिखित में से सही कथन चुनकर लिखिए :

1. (अ) लोकातीत प्रज्ञा से जो ज्ञान होता है उसे सम्यग्दृष्टि कहते हैं।
   (ब) अनुभव से जो ज्ञान होता है उसे सम्यग्दृष्टि कहते हैं।
   (स) शास्त्रों से जो ज्ञान होता है उसे सम्यग्दृष्टि कहते हैं।
   (द) महापुरुषों से जो ज्ञान होता है उसे सम्यग्दृष्टि कहते हैं।
2. (अ) जिसमें सत्य और धर्म रहता है वही पवित्र ब्राह्मण है गोत्र आदि से नहीं।
   (ब) जिसका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ है वही पवित्र ब्राह्मण है।
   (स) जिसका कर्म ब्राह्मण का है वह पवित्र ब्राह्मण है।
   (द) जिसे ब्रह्म का ज्ञान है वही पवित्र ब्राह्मण है।
3. (अ) 'स्वप्नवासवदत्तं' नाटक श्रीहर्ष द्वारा लिखा गया है।
   (ब) 'स्वप्नवासवदत्तं' नाटक भास द्वारा लिखा गया है।

(स) 'स्वप्नवासवदत्तं' नाटक विल्हण द्वारा लिखा गया है।
(द) 'स्वप्नवासवदत्तं' नाटक राजेश्वर द्वारा लिखा गया है।

4. (अ) रदनिका का चित्रण 'स्वप्नवासवदत्तं' में है।
(ब) रदनिका का चित्रण 'रत्नावली' में है।
(स) रदनिका का चित्रण 'कर्पूरमंजरी' में है।
(द) रदनिका का चित्रण 'मृच्छकटिकं' में है।

5. (अ) 'इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्' यह कथन वामन का है।
(ब) 'इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्' यह कथन दण्डी का है।
(स) 'इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्' यह कथन भामह का है।
(द) 'इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्' यह कथन राजशेखर का है।

6. (अ) भाषा का चरम अवयव वाक्य है।
(ब) भाषा का चरम अवयव पद है।
(स) भाषा का चरम अवयव ध्वनि है।
(द) भाषा का चरम अवयव अर्थ है।

7. (अ) 'गंगायां घोषः' का अर्थ वाच्यार्थ है।
(ब) 'गंगायां घोषः' का अर्थ तात्पर्यार्थ है।
(स) 'गंगायां घोषः' का अर्थ लक्ष्यार्थ
(द) 'गंगायां घोषः' का अर्थ व्यङ्ग्यार्थ है।

8. (अ) अरस्तू ग्रीक के भाषावैज्ञानिक हैं।
(ब) अरस्तू भारत के भाषावैज्ञानिक हैं।
(स) अरस्तू जर्मन के भाषावैज्ञानिक हैं।
(द) अरस्तू फ्रांस के भाषावैज्ञानिक हैं।

खण्ड—ब

9. निम्नलिखित का सन्दर्भपूर्वक अर्थ स्पष्ट कीजिए :
यो च बुद्ध◇च धम्म◇च सङ्घ◇च स्सरणं गतो।
चत्तारि अरियसच्चानि सम्पप्प◇ ◇ाव पस्सति⌋

10. निम्नलिखित का सन्दर्भपूर्वक हिन्दी अनुवाद लिखिए :
करोथ बुद्धवचनं खणो वे मा उपच्चगा।
रवणातीता हि सोचन्ति निरयम्हि समप्पिता⌋

11. निम्नलिखित का संस्कृत अथवा हिन्दी अनुवाद लिखिए।
कमरमु कमरदु कमु अणुविचिद ओ।

कमु अणुस्वरो भिखु जधर्मन परिहयदि।
धरममु धमरदु धमु अणुविचिदओ।
धमु अणुस्वरो भिखु जधर्म न परिहयदि।

12. निम्नलिखित का हिन्दी&अनुवाद लिखिए :
न भिखु तवद भोदि यवद भिक्षदि पर।
विश्प धर्म जमदइ भिखु मोदि न तवद।
यो दु बहेति पवण वदव ब्रम्म&यियव।
जग इ चरदि लोकु सो दु भिखु दु वुचदि।

13. प्राकृत की व्युत्पत्ति बतलाते हुए भाषाविज्ञान की दृष्टि से प्राकृत के मान्य रूपों के नाम लिखिए।
14. वाक्य विज्ञान की विषयवस्तु क्या होती है ? वाक्य विज्ञान कितने प्रकार के होते हैं ?

सत्रीय कार्य– 2

(Assignment—2)

खण्ड—स

15. 'सस जातकम्' का कथासार लिखते हुए इसका नैतिक आदर्श स्पष्ट कीजिए।
16. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चेटी&विदूषक संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।
17. 'घत्ता' में स्वयंभूकृत विज्ञापन को अपने शब्दों में लिखिए।
18. 'शिक्षा' नामक वेदांग में वर्णित विषयवस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

सत्रीय कार्य– 3

(Assignment—3)

खण्ड—द

19. मालुक्यपुत्त गाथा में संकलित बुद्ध के उपदेशों का वर्णन कीजिए।
20. मूलदेवकथा का सारांश लिखिए।
21. भाषा&परिवारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
22. शब्दार्थ&सम्बन्ध के विषय में सुकरात और प्लेटो की मान्यताओं का वर्णन कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

(Assignment—4)

खण्ड—इ

23. भारतीय आर्यभाषाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
24. कोश विज्ञान क्या है ? विभिन्न प्रकार के कोशों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 31 अगस्त 2024 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जनवरी–दिसंबर 2024 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जनवरी–दिसंबर 2024 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है।**

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य (Assignment Work) सत्र – जनवरी–दिसंबर 2024

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – व्याकरण एवं निबन्ध **प्रश्नपत्रः तृतीय**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 10**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

(Assignment—1)

खण्ड—अ

1. 'प्रातिपदिकार्थ' से क्या तात्पर्य है ?
2. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में करण संज्ञक क्या है ?
3. 'नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः' यह उदाहरण किस सूत्र का है ?
4. 'राज्ञः पुरुषः' उदाहरण में 'राज्ञः' किस विभक्ति में है ?
5. 'शिष्यः' इस शब्द में कौन&सा प्रत्यय है ?
6. त्क तथा क्तवतु प्रत्यय का सूत्र क्या है ?
7. व्याकरण महाभाष्य में मुख्य प्रयोजन कितने हैं ?
8. व्याकरण महाभाष्य में पतंजलि ने किन सूत्रों की व्याख्या की है ?

खण्ड—ब

9. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र की व्याख्या कीजिए।
10. 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. अपादान संज्ञा विधायक किसी एक सूत्र की व्याख्या कीजिए।

12. 'कारकः' एवं 'कर्त्ता' शब्दों की रचना प्रक्रिया को समझाइए।
13. ल्यप् एवं क्त्वा प्रत्यय को समझाइए।
14. आगमपदार्थनिरूपण भाष्य की हिन्दी व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

(Assignment—2)

खण्ड—स

15. 'नमः स्वस्ति स्वाहास्वधाऽलंवषडयोगाच्च' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
16. 'अभिनिविशश्च' सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
17. किन्हीं दो कृत प्रत्ययों की नामोल्लेखपूर्वक विस्तृत व्याख्या कीजिए।
18. 'रक्षोहागमलध्वसंदेहाः' सूत्र की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

(Assignment—3)

खण्ड—द

19. 'उपान्वध्याङ्वसः' तथा 'भुवः प्रभवः' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
20. 'इत्थंभूतलक्षणे' तथा 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र की उदाहरणपूर्वक व्याख्या कीजिए।
21. 'राल्लोपः' सूत्र की उदाहरणपूर्वक विस्तृत व्याख्या कीजिए।
22. 'सिद्धेशब्दे अर्थे सम्बन्धे चेति' की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

(Assignment—4)

खण्ड—इ

23. निम्नलिखित शब्दों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :
    (क) गत्वा
    (ख) प्रकृत्य
    (ग) प्रियंवदः
24. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए :
    (क) पुराणमाहात्म्यम्
    (ख) महाकविः भवभूतिः
    (ग) संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि
    (घ) आचारः परमो धर्मः
    (ङ) अनुशासनस्य महत्त्वम्

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 31 अगस्त 2024 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जनवरी–दिसंबर 2024 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जनवरी–दिसंबर 2024 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार सत्र 100 प्रतिशत (30 अंक) का निर्धारित रहेगा।**

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य (Assignment Work) सत्र – जनवरी–दिसंबर 2024

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – भारतीय दर्शन **प्रश्नपत्रः चतुर्थ**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

(Assignment—1)

खण्ड—अ

1. 'तर्कभाषा' किस दर्शन के अन्तर्गत आती है ?
2. सांख्यानुसार दुःखत्रयों का नामोल्लेख कीजिए।
3. प्रमाण कितने होते हैं ? नाम लिखिए।
4. सृष्टिक्रम का विभाग किस&किस के संयोग से होता है ?
5. सूक्ष्म शरीर का दूसरा नाम क्या है ?
6. बौद्ध दर्शन के चार आर्यसत्य कौन&कौन से हैं ?
7. भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों को किन&किन भागों में विभाजित किया जा सकता है ?
8. पंच तन्मात्राओं का नाम लिखिए।

खण्ड—ब

9. जैन दर्शन में मान्य त्रिरत्नों का परिचय देकर उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

10. परार्थानुमान के पाँच अवयवों को स्पष्ट कीजिए।
11. प्रकृति विकृतयः सप्त का नामोल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए।
12. विर्विकल्पक समाधि के कितने अ① होते हैं ? सभी अ①ों का स्पष्टीकरण दीजिए।
13. वेदान्त की परिभाषा दीजिए।
14. सूक्ष्म शरीर के 17 अवयवों का नाम लिखिए।

सत्रीय कार्य– 2

(Assignment—2)

खण्ड—स

15. न्याय दर्शन का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालिए।
16. चार्वाक दर्शन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
17. अहरसिद्धियों की विवेचना कीजिए।
18. जैनधर्म के सप्तभ①ीय न्याय की विवेचना कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

(Assignment—3)

खण्ड—द

19. प◈चीकरण प्रक्रिया पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
20. आस्तिक दर्शनों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
21. बौद्धों के अष्टा①क मार्ग की विवेचना कीजिए।
22. 'तत् एवं असि' तथा 'अहं ब्रह्मा अस्मि' को कौन से वाक्य की संज्ञा दी जाती है ? विस्तृत विवेचना कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

(Assignment—4)

खण्ड—इ

23. वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म के स्वरूप का विवेचन करते हुए सांख्य के पुरुष से इसकी तुलनात्मक विवेचना कीजिए।

अथवा

वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान (माया) के स्वरूप की विशद विवेचना कीजिए।

24. सांख्य दर्शन के बन्धन और मोक्ष की अवधारणा की अपने तथ्यों के आधार पर विवेचना कीजिए।

अथवा

जैन दर्शन के अनुसार प्रमाणों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 31 अगस्त 2024 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जनवरी–दिसंबर 2024 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जनवरी–दिसंबर 2024 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**